तत्त्वार्थसूत्र

परिचय - पुनरावर्तन

मूलसूत्र

हितोपदेशी वीतरागी

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।

ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये॥

सर्वज्ञ प्रयोजन - भावना

निश्चय मोक्षमार्ग की व्याख्या

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः ॥ १ ॥

अर्थ : [सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि] सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, और सम्यक्चारित्र तीनों मिलाकर [मोक्षमार्गः] मोक्ष का मार्ग है, अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति का उपाय है।

सम्यग्दर्शन + सम्यग्ज्ञान + सम्यक्चारित्र = मोक्षमार्ग

तीनों की एकता ही मोक्षमार्ग है।

जीव के विशेष गुणों का स्वरूप

गुण	स्वरूप	सम्यक् शब्द पहले रखने से
दर्शन [१] = श्रद्धा	प्रतीति/मान्यता	आत्मा की यथार्थ प्रतीति
ज्ञान	जानना	आत्मा को यथार्थ जानना
चारित्र	लीनता	आत्मा में यथार्थ लीनता

[१] यहाँ ' दर्शन ' का अर्थ सामान्य प्रतिभास नही है।

सम्यग्दर्शन का स्वरूप

- सम्यग्दर्शन का अर्थ "ऐसा ही है; अन्यथा नहीं" -- ऐसा प्रतीतिभाव।
- अपने आत्मा की विपरीततारहित --- यथार्थ प्रतीति सम्यग्दर्शन है।

सम्यग्ज्ञान का स्वरूप

- संशय , विपर्यय , और अनध्यवसायरहित अपने आत्मा का तथा पर का यथार्थज्ञान , सम्यग्ज्ञान है।

सम्यक्चारित्र का स्वरूप

- सम्यग्दर्शन-ज्ञानपूर्वक आत्मा में स्थिरता का होना सम्यक्चारित्र है।

मोक्षमार्ग का स्वरूप

- यह शब्द एकवचन है।
- मोक्ष के तीन मार्ग नहीं होते, किन्तु इन तीनों [सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र] का एकत्व मोक्षमार्ग है।
- मोक्षमार्ग --- अपने आत्मा की शुद्धि का मार्ग, पंथ, उपाय
- दूसरे नाम: अमृतमार्ग, स्वरूपमार्ग, कल्याणमार्ग

विषय-वस्तु

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
निश्चय मोक्षमार्ग की व्याख्या	१	१
निश्चय सम्यग्दर्शन का लक्षण	२	१
निश्चय सम्यग्दर्शन के भेद	३	१
तत्त्वों के नाम	४	१
निश्चयसम्यग्दर्शनादि शब्दों के अर्थ समझने की रीत	५	१

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र २

निश्चय सम्यग्दर्शन का लक्षण

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।२ ।।

अर्थ - [तत्त्वार्थश्रद्धानं] तत्त्व (वस्तु) के स्वरूपसहित अर्थ; जीवादि पदार्थों की श्रद्धा करना [सम्यग्दर्शनम्] सम्यग्दर्शन है।

तत्त्व + अर्थ + श्रद्धान = सम्यग्दर्शन

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।२।। - टीका - बिन्दु : १

- तत्त्व --- तत् + त्व --- तत्-पन या उसरूपता या भावस्वरूप
- अर्थ --- द्रव्य - गुण - पर्याय
- श्रद्धान --- प्रतीति
- सम्यक् --- सच्ची; दर्शन --- श्रद्धा
- प्रत्येक तत्त्व स्वरूप से तत्पन और पररूप से अतत्पन है
- तत्त्वों की सच्ची [- निश्चय] श्रद्धा का नाम, सम्यग्दर्शन है
- स्वरूप [भाव] सहित प्रयोजनभूत पदार्थों का श्रद्धान, सम्यग्दर्शन है

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।२।। - द्रष्टांत

- मीठाई - मिश्रि - मीठापन
- नमकीन - नमक - खारापन

तत्त्व	अर्थ	तत्त्वार्थश्रद्धान
जीव	दर्शन - ज्ञानमय वस्तु	मै जीव हुँ
पुद्गल	रूपी वस्तु	मै पुद्गल नहीं हुँ

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।२।। - टीका - बिन्दु : २

सम्यग्दर्शन	तत्त्वार्थश्रद्धान
लक्ष्य	लक्षण [१]

'तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्' यह लक्षण, निश्चय सम्यग्दर्शन का है, और वह तिर्यञ्च आदि से लेकर केवली तथा सिद्ध भगवान में समानरूप से व्याप्त है और वह लक्षण, अव्याप्ति–अतिव्याप्ति और असम्भवदोष से रहित है।

[१] विस्तृत चर्चा के लिए देखिए मोक्षमार्ग प्रकाशक, अध्याय ९, पृष्ठ ३२४ से ३२५

अध्याय १: सूत्र २ - निश्चय सम्यग्दर्शन का लक्षण

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।२।। - टीका - बिन्दु : ३ - विशेष [१]

जीवादि को जैसे 'तत्त्व' कहा जाता है, वैसे ही 'अर्थ' भी कहा जाता है। जो तत्त्व है, वही अर्थ है और उसका श्रद्धान, सम्यग्दर्शन है। जो पदार्थ जैसा अवस्थित है, उसका उसी प्रकार होना, सो तत्त्व है, और 'अर्यते' कहने पर निश्चय किया जाए सो अर्थ है; इसलिए तत्त्वस्वरूप का निश्चय, तत्त्वार्थ है और तत्त्वार्थ का श्रद्धान, सम्यग्दर्शन है।

[१] मोक्षमार्ग प्रकाशक, अध्याय ९, पृष्ठ ३१८

अध्याय १: सूत्र २ - निश्चय सम्यग्दर्शन का लक्षण

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।२।। - टीका - बिन्दु : ४ - विशेष [१]

- विपरीत अभिनिवेश (उल्टे अभिप्राय) से रहित जीवादि का तत्त्वार्थश्रद्धान, सम्यग्दर्शन का लक्षण है।
- सम्यग्दर्शन में विपरीत मान्यता नहीं होती, यह बतलाने के लिए 'दर्शन' से पूर्व 'सम्यक्' पद दिया गया है।
- जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष—ये सात तत्त्व हैं - ऐसा चौथे सूत्र में कहेंगे।

[१] मोक्षमार्ग प्रकाशक, अध्याय ९, पृष्ठ ३२४ - ३२५

अध्याय १: सूत्र २ - निश्चय सम्यग्दर्शन का लक्षण

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।२।। - सम्यग्दर्शन की महिमा

- सम्यग्दर्शन के बिना ज्ञान, चारित्र और तप में सम्यक्ता नहीं आती।
- सम्यग्दर्शन ही ज्ञान, चारित्र, वीर्य और तप का आधार है।
- सम्यग्दर्शन प्राप्त करने का प्रयत्न करने के लिए बारम्बार उपदेश करते हैं।
- जैसे — आँखों से मुख की सुन्दरता-शोभा होती है, वैसे ही सम्यग्दर्शन से ज्ञानादिक में सम्यक्त्व-सुन्दरता-शोभा आती है।

अध्याय १: सूत्र २ - निश्चय सम्यग्दर्शन का लक्षण

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।२।। - सम्यग्दर्शन की महिमा

इसी सम्बन्ध में रत्नकरण्डश्रावकाचार में कहा है कि —

न सम्यक्त्वसमं किंचित्त्रैकाल्ये त्रिजगत्यपि।
श्रेयोऽश्रेयश्च मिथ्यात्वसमं नान्यत्तनूभृताम् ।।३४।।

अर्थ - तीनों काल और तीनों लोक में जीवों का सम्यग्दर्शन के समान दूसरा कोई कल्याण और मिथ्यात्व के समान अकल्याण नहीं है।

अध्याय १: सूत्र २ - निश्चय सम्यग्दर्शन का लक्षण

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।२।। - सम्यग्दर्शन की महिमा

सम्यक्त्व के ध्यान की महिमा कहते हैं —

सम्मत्तं जो झायइ सम्माइट्ठी हवेइ सो जीवो।
समत्तपरिणदो उण खवेइ दुट्ठट्ठकम्माणि॥

(- मोक्षपाहुड़, गाथा-८७)

अर्थ - जो सम्यक्त्व को ध्याता है, वह जीव, सम्यग्दृष्टि है और सम्यक्त्वरूप परिणत जीव, आठों दुष्ट कर्मों का क्षय करता है।

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।२।। - सम्यग्दर्शन की महिमा

इस बात को संक्षेप में कहते हैं—

किं बहुणा भणिएणं जे सिद्धा णरवरा गए काले।
सिज्झिहहि जे वि भविया तं जाणइ सम्ममाहप्पं॥

(– मोक्षपाहुड़, गाथा–८८)

अर्थ – श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव कहते हैं कि बहुत कहने से क्या साध्य है! जो नरप्रधान भूत काल में सिद्ध हुए और भविष्य में सिद्ध होंगे, वे सब सम्यक्त्व का ही माहात्म्य जानो।

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।२।। - सम्यग्दर्शन की महिमा

निरन्तर सम्यक्त्व का पालन करते हैं, वे धन्य हैं—

ते धण्णा सुकयत्था ते सूरा ते वि पंडिया मणुया।
सम्मत्तं सिद्धियरं सिविणे वि ण मइलियं जेहिं॥

(- मोक्षपाहुड़, गाथा-८९)

अर्थ - जिस पुरुष के मुक्ति को प्राप्त करनेवाला सम्यक्त्व है, और उस सम्यक्त्व को स्वप्न में भी मलिन नहीं किया — अतिचार नहीं लगाया, वह पुरुष धन्य है, वही कृतार्थ है, वीर-शूरवीर है, वही पण्डित है, वही मनुष्य है।

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।२।। - सम्यग्दर्शन ही प्रथम कर्तव्य

श्रावक को पहले क्या करना चाहिए, सो कहते हैं:—

गहिऊण य सम्मत्तं सुणिम्मलं सुरगिरीव णिक्कंपं।
तं जाणे झाइज्जइ सावय! दुक्खक्खयट्ठाए॥

(- मोक्षपाहुड़, गाथा ८६)

अर्थ - श्रावक को पहले सुनिर्मल, मेरु के समान निष्कम्प-अचल (चल, मल और अगाढ़ दूषण से रहित, अत्यन्त निश्चल) सम्यक्त्व को ग्रहण करके, दुःखों के क्षय के लिए उसे (सम्यक्त्व के विषयभूत एकरूप आत्मा को) ध्यान में ध्याना चाहिए।

अध्याय १: सूत्र २ - निश्चय सम्यग्दर्शन का लक्षण

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।२।। - सम्यग्दर्शन का बल

- ज्ञानादि की हीनाधिकता होने पर भी तिर्यञ्चादि (पशु आदि) के और केवली तथा सिद्ध भगवान के सम्यग्दर्शन को समान कहा है; उनके आत्म-प्रतीति एक ही प्रकार की होती है
- केवली और सिद्ध भगवान, रागादिरूप परिणमित नहीं होते और संसारावस्था को नहीं चाहते, यह सम्यग्दर्शन का ही बल समझना चाहिए।

(आधुनिक हिन्दी मोक्षमार्गप्रकाशक, अध्याय ९, पृष्ठ ३२४)

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।२।। - सम्यग्दर्शन के भेद

- स्वपर्याय की योग्यता की अपेक्षा से सम्यग्दर्शन के तीन भेद हो जाते हैं
- (i) औपशमिक सम्यग्दर्शन
- (ii) क्षायोपशमिक सम्यग्दर्शन
- (iii) क्षायिक सम्यग्दर्शन

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।२।। - औपशमिक सम्यग्दर्शन

- आत्मा के पुरुषार्थ से जीव, प्रथम सम्यग्दर्शन प्रगट करता है, तब औपशमिक सम्यग्दर्शन ही होता है।
- उस दशा में मिथ्यात्वकर्म के तथा अनन्तानुबन्धी कषाय के जड़ रजकण स्वयं उपशमरूप होते हैं।
- जैसे – मैले पानी में से मैल नीचे बैठ जाता है अथवा जैसे अग्नि, राख से ढक जाती है।

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।२।। - औपशमिक सम्यग्दर्शन

- अनादि मिथ्यादृष्टि के औपशमिक सम्यग्दर्शन होने पर, मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धी की चार — ऐसी पाँच प्रकृतियाँ उपशमरूप होती हैं और
- सादि मिथ्यादृष्टि के औपशमिक सम्यग्दर्शन होने पर, जिसके मिथ्यात्व की तीन प्रकृतियाँ सत्तारूप होती हैं, उसके मिथ्यात्व की तीन और अनन्तानुबन्धी की चार, ऐसे सात प्रकृतियाँ उपशमरूप होती हैं, और
- जिस सादि मिथ्यादृष्टि के एक मिथ्यात्व प्रकृति ही सत्ता में होती है, उसके मिथ्यात्व की एक, और अनन्तानुबन्धी की चार — ऐसी पाँच प्रकृतियाँ उपशमरूप होती हैं।

अध्याय १: सूत्र २ - निश्चय सम्यग्दर्शन का लक्षण

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।२।। - क्षायोपशमिक सम्यग्दर्शन

- इस दशा में मिथ्यात्व और मिश्रमिथ्यात्वकर्म के रजकण क्षायोपशमिकरूप होते हैं, आत्मप्रदेशों से पृथक् होने पर उनका फल नहीं होता, और
- क्षायोपशमिक सम्यग्दर्शन में सम्यक् मोहनीयकर्म के रजकण उदयरूप होते हैं, यह प्रकृति देशघाति होती हैं, तथा अनन्तानुबन्धी कषायकर्म के रजकण विसंयोजनरूप होते हैं।

अध्याय १: सूत्र २ - निश्चय सम्यग्दर्शन का लक्षण

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।२।। - क्षायिक सम्यग्दर्शन

- इस दशा में मिथ्यात्वप्रकृति के (तीनों उपविभाग के) रजकण, आत्मप्रदेश से सर्वथा हट जाते हैं
- इसलिए मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धी की सातों प्रकृतियों का क्षय हुआ कहलाता है।

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।२।। - सम्यग्दर्शन के अन्य भेद

- सभी सम्यग्दृष्टि जीवों के आत्मा की तत्त्व की प्रतीति एक सी होती है,
- तथापि चारित्रदशा की अपेक्षा से उनके दो भेद हो जाते हैं —
- (१) वीतराग सम्यग्दर्शन
- (२) सराग सम्यग्दर्शन

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।२।। - वीतराग सम्यग्दर्शन

जब सम्यग्दृष्टि जीव, अपने आत्मा में स्थिर होता है, तब उसके निर्विकल्पदशा होती है, तब राग के साथ बुद्धिपूर्वक सम्बन्ध नहीं होता। जीव की इस दशा को 'वीतराग-सम्यग्दर्शन' कहा जाता है

अध्याय १: सूत्र २ - निश्चय सम्यग्दर्शन का लक्षण

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।२।। - सराग सम्यग्दर्शन

- जब सम्यग्दृष्टि जीव अपने में स्थिर नहीं रह सकता, तब राग में उसका अनित्य–सम्बन्ध होता है; इसलिए उस दशा को 'सराग–सम्यग्दर्शन' कहा जाता है।

- ध्यान रहे कि सम्यग्दृष्टि जीव ऐसा कभी नहीं मानता कि शुभराग से धर्म होता है या धर्म में सहायता होती है।

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।२।। - सराग सम्यग्दर्शन के प्रशमादि भाव

- सम्यग्दृष्टि के राग के साथ सम्बन्ध होता है, तब चार प्रकार के शुभभाव होते हैं
  - प्रशम - क्रोध-मान-माया-लोभ स बन्धी राग-द्वेषादि की मन्दता।
  - संवेग - संसार, अर्थात् विकारीभाव का भय।
  - अनुकम्पा - स्वयं और पर, सर्व प्राणियों पर दया का प्रादुर्भाव।
  - आस्तिक्य - जीवादि तत्त्वों का जैसा अस्तित्त्व है, वैसा ही आगम और युक्ति से मानना।

अध्याय १: सूत्र २ - निश्चय सम्यग्दर्शन का लक्षण

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।२।। - सराग सम्यग्दर्शन के प्रशमादि भाव

- सराग सम्यग्दृष्टि को इन चार प्रकार का राग होता है;
- इसलिए इन चार भावों को उपचार से सम्यग्दर्शन का लक्षण कहा जाता है।
- जीव के सम्यग्दर्शन न हो तो वे शुभभाव प्रशमाभास, संवेगाभास, अनुकम्पाभास और आस्तिक्याभास हैं—ऐसा समझना चाहिए।
- प्रशमादिक, सम्यग्दर्शन के यथार्थ (निश्चय) लक्षण नहीं हैं; उसका यथार्थ लक्षण तो अपने शुद्धात्मा की प्रतीति है।

अध्याय १: सूत्र २ - निश्चय सम्यग्दर्शन का लक्षण

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।२।। - सम्यग्दर्शन का विषय तथा स्वरूप

प्रश्न – सम्यग्दृष्टि अपने आत्मा को कैसा मानता है ?

उत्तर – सम्यग्दृष्टि अपने आत्मा को परमार्थतः त्रिकाल, शुद्ध, ध्रुव, अखण्ड, चैतन्यस्वरूप मानता है।

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।२।। - सम्यग्दर्शन का विषय तथा स्वरूप

प्रश्न – उस समय जीव की विकारी अवस्था तो होती है, सो उसका क्या?

उत्तर – विकारी अवस्था, सम्यग्ज्ञान का विषय है; इसलिए उसे सम्यग्दृष्टि जानता तो है, किन्तु सम्यग्दृष्टि का आश्रय अवस्था (पर्याय-भेद) पर नहीं होता; क्योंकि अवस्था के आश्रय से जीव के राग होता है और ध्रुवस्वरूप के आश्रय से शुद्धपर्याय प्रगट होती है।

अध्याय १: सूत्र २ - निश्चय सम्यग्दर्शन का लक्षण

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।२।। - दूसरे सूत्र का सिद्धान्त

- संसारसमुद्र (मोह–राग–द्वेषादि) से रत्नत्रयरूपी (सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्ररूपी) जहाज को पार करने के लिए, सम्यग्दर्शन चतुर नाविक है।
- जो जीव, सम्यग्दर्शन को प्रगट करता है, वह अनन्त सुख को पाता है।
- जिस जीव के सम्यग्दर्शन नहीं है, वह यदि पुण्य करे तो भी अनन्त दुःख भोगता है; इसलिए जीवों को वास्तविक सुख प्राप्त करने के लिए[१] तत्त्व का स्वरूप यथार्थ समझकर, सम्यग्दर्शन प्रगट करना चाहिए।

[१] श्री समयसार, गाथा १७-१८, सोनगढ़ से प्रकाशित।

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।२।। - दूसरे सूत्र का सिद्धान्त

- तत्त्व का स्वरूप समझे बिना, किसी जीव के सम्यग्दर्शन नहीं होता जो जीव तत्त्व के स्वरूप को यथार्थतया समझता है, उसे सम्यग्दर्शन होता ही है[१]
- इन सात तत्त्वों में सारभूत तत्त्व त्रिकाली शुद्ध जीव है, उसके आश्रय से सम्यग्दर्शन होता है।

[१] श्री समयसार, गाथा ११ तथा श्री नियमसार, गाथा ५०, सोनगढ़ से प्रकाशित।

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र २

विषय-वस्तु

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
निश्चय मोक्षमार्ग की व्याख्या	१	१
निश्चय सम्यग्दर्शन का लक्षण	२	१
निश्चय सम्यग्दर्शन के भेद	३	१
तत्त्वों के नाम	४	१
निश्चयसम्यग्दर्शनादि शब्दों के अर्थ समझने की रीत	५	१

जिनवाणी स्तुति